>

Title: Need to ban the tobacco products.

श्रीमती सुषमा स्वराज : अध्यक्षा जी, आपका बहुत-बहुत धन्यवाद। मैं आपकी अनुमति से एक जन स्वास्थ्य से जुड़ा हुआ बहुत महत्वपूर्ण विषय सदन में उठाना चाहती हूं। जब भी जन स्वास्थ्य पर पड़ने वाले दुष्प्रभावों के कारणों की समीक्षा की जाती है, तो सबसे प्रमुख कारण उभरकर आता है -- तम्बाकू उत्पादों का सेवन।

अध्यक्षा जी, आप जानती हैं कि तम्बाकू दो तरह से सेवन किया जाता है -- सिगरेट, बीड़ी पी कर या गुटका, पान मसाला, ज़र्दा, खैनी खाकर। अध्यक्षा जी, आप हैरान होंगी, एक चौंका देने वाला आंकड़ा आया है कि तम्बाकू उत्पादों के सेवन से आठ से नौ लाख लोग प्रतिवर्ष मर रहे हैं। यह आंकड़ा सरकार ने दिया है और यह पुराना नहीं है। पिछले शुक्रवार लोक सभा में एक तारांकित प्रश्न संख्या 230 के जवाब में सरकार ने बताया कि तम्बाकू उत्पादों के सेवन से होने वाले रोगों के कारण भारत में प्रत्येक वर्ष अनुमानत: आठ से नौ लाख लोगों की मृत्यु हो जाती है।...(व्यवधान)

श्री जय प्रकाश अग्रवाल (उत्तर पूर्व दिल्ली): जीरो ऑवर में इसका क्या काम है? ...(व्यवधान)

श्रीमती सुषमा स्वराज : अगर यह जीरो ऑवर का विषय नहीं है, तो फिर किसका है? ...(व्यवधान)

अध्यक्ष महोदया : ठीक है, आप बोलिये।

â€¦(व्यवधान)

अध्यक्ष महोदया : अग्रवाल जी, आप बैठ जाइये।

â€¦(व्यवधान)

श्रीमती सुषमा स्वराज : अध्यक्षा जी, जीरो ऑवर में महत्वपूर्ण विषय उठाये जाते हैं। ...(व्यवधान)

अगर यह महत्वपूर्ण विषय नहीं है, तो फिर कौन सा है? ...(व्यवधान) आठ से नौ लाख लोग प्रतिवर्ष इसके सेवन से मर रहे हैं। ...(व्यवधान)

अध्यक्ष महोदया : आप उन्हें बोलने दीजिए।

â€¦(व्यवधान)

MADAM SPEAKER: Nothing else is going on record.

*(Interruptions) â€¦ **

अध्यक्ष महोदया : आप बैठ जाइये।

â€¦(व्यवधान)

अध्यक्ष महोदया : हरिन पाठक जी, आप बैठ जाइये।

â€¦(व्यवधान)

श्रीमती सुषमा स्वराज : अध्यक्षा जी, आपने मेरे विषय के महत्व को समझते हुए मुझे जीरो ऑवर में बोलने की अनुमति दी है। ...(व्यवधान)

अध्यक्ष महोदया : आप बोलिये।

â€¦(व्यवधान)

श्रीमती सुषमा स्वराज : मैं बिना अनुमति के नहीं बोल रही हूं। आपने इस विषय को सही पाया है। ...(व्यवधान) जीरो ऑवर में अगर ऐसे महत्वपूर्ण मुद्दे नहीं उठेंगे, तो कौन सा मुद्दा उठेगा?

महोदया, मैं आपसे कह रही हूं कि यह सरकारी आंकड़ा है - आठ से नौ लाख लोग हर वर्ष तंबाकू के सेवन से मर जाते हैं। यह रोग केवल मारता ही नहीं, यह रोग व्यक्ति को काया और माया, दोनों से तोड़ देता है। जो बीमार है, इसे तन पर झेलता है और जो तीमारदार है, वह मन और धन पर झेलता है। जब आप अपने किसी प्रियजन को दर्द से कराहता हुआ, तड़पता हुआ देखते हैं, तो अपना मानसिक संतुलन खो बैठते हैं और जहां तक धन का सवाल है, घर के बरतन तक बिक जाते हैं, परिवार के परिवार बर्बाद हो जाते हैं। मैं आपसे कहना चाहती हूं कि इसी प्रश्न के उत्तर में एक रिपोर्ट रखी गयी, जिसमें यह कहा गया है कि भारत में 35 प्रतिशत वयस्क तंबाकू उत्पादों का सेवन कर रहे हैं। इसलिए जरूरी है कि सरकार की तरफ से इस विषय में कोई सुनिश्चित नीति बने। जब मैं स्वास्थ्य मंत्री थी वर्ष 2003 में, मैंने इसी सदन से एक बिल पारित करवाया था जिसे अंग्रेजी में COTPA कहते थे। उसमें तंबाकू के विज्ञापनों पर प्रतिबंध लगाने की बात थी, तंबाकू स्कूलों के 100 गज के अंदर न बिके, इसकी बात थी। तंबाकू 18 वर्ष से कम बच्चों को न बेची जाए, इसकी बात थी और तंबाकू उत्पादों की पैकेजिंग पर चेतावनियां देने की बात थी। वर्ष 2003 के बाद वर्ष 2008 में इस सरकार ने उन चेतावनियों को सुदृढ़ करने का काम किया, लेकिन जो नियमावली बनाई, वह वर्ष 2009 तक ठण्डे बस्ते में पड़ी रही और वर्ष 2009 में उसे लागू किया। उसमें लिखा था कि हरेक साल के बाद उनको और भयावह बनाया जाएगा। वर्ष 2010 में वह वापस भयावह बननी थी, लेकिन वर्ष 2010 में सरकार ने उसे और छः महीने, 01/12/2010 बढ़ा दिया, तो अक्टूबर में मैंने स्वास्थ्य मंत्री जी को चिट्ठी लिखी और उसमें मैंने

उनसे कहा कि "तंबाकू के पैकेटों पर छापा जाने वाला जो विज्ञापन आपने तय किया है, वह उपयुक्त है, किन्तु इसको लागू किया जाना बार-बार टल रहा है। अभी सरकार ने तय किया है कि 31 दिसंबर से इसे लागू करवा देगी, मेरा आपसे यही अनुरोध है कि इसे और मत टालिए, 31 दिसंबर से इसे अवश्य लागू करवा दीजिए। पब्लिक हेल्थ सुधारने की दिशा में यह एक प्रभावी कदम साबित होगा। " लेकिन मुझे दुख है, मुझे इसका जवाब 27 जनवरी को मिला। उससे पहले ही सरकार इसे टालने के बारे में तय कर चुकी थी, वर्ष 2011 तक सरकार इसको टाल चुकी थी और टालने के बाद उन्होंने 27 जनवरी को मुझे यह जवाब भेजा। इसीलिए मैं यह विषय आपकी अनुमति से यहां उठाना चाह रही हूं। अभी चंद दिन पहले तंबाकू सेवन के विक्टिम्स, जिनको मुंह, गाल, गले और जुबान का कैंसर हो गया है, मुझे मिलने आए थे । ये आठ से नौ लाख लोग ऐसे ही नहीं मर रहे हैं, वे कैंसर से मर रहे हैं। एक तरफ सरकार योजना बना रही है कि 100 करोड़ रुपये खर्च करके 100 जिलों में कैंसर से मुक्ति दिलवाने की और दूसरी तरफ आठ से नौ लाख लोग इसलिए मर रहे हैं कि तंबाकू उत्पादों पर हम न तो प्रतिबंध लगाते हैं, न उन चेतावनियों को सुदृढ़ करते हैं। वे विक्टिम्स 17 तारीख को यहां आ रहे हैं, वे एमपीज को सेंसेटाइज करना चाहते हैं, लेकिन मुझे हैरानी है कि जब मैं यह विषय उठाती हूं, तो उस पर टोकाटाकी होती है। मैं आपसे कहना चाहती हूं, अगर आप मुझे इजाजत देंगी, मैं उनको आपके पास लेकर आउंगी। उनके खौफनाक चेहरे, उनके अंदर आत्मविश्वास की कमी, उनके अंदर जीने की इच्छा का अभाव सामने देखकर पता चलता है। मैं आपसे भी मिलवाउंगी। 17 तारीख को वे सारे विक्टिम्स आ रहे हैं। टाटा कैंसर हॉस्पिटल के डाक्टरों ने यह बीड़ा उठाया है और वे उनको सब जगह घुमा रहे हैं। मैं आपके माध्यम से सरकार से कहना चाहती हूं कि वैसे तो वांछनीय यह है कि इन उत्पादों के सेवन पर प्रतिबंध लगाया जाए, लेकिन कम से कम जो चेतावनियां सुदृढ़ करने की बात है, जिसमें एक भयावह चेहरा उस पाउच के ऊपर लगता है, सिगरेट के पैकेट के ऊपर लगता है, कम से कम उसे करवाने का काम आप कीजिए। मैं चाहूंगी कि आप सरकार को निर्देशित कीजिए कि जो इन्होंने 31 दिसंबर, 2011 तक इसको टाल दिया है, इसको टालें नहीं और तुंत इसको लागू करें। यही मेरा आपसे अनुरोध है।...(व्यवधान)

अध्यक्ष महोदया : महेन्द्रसिंह पी. चौहाण, डॉ. राजन सुशान्त, श्री वीरेन्द्र कुमार, श्रीमती दर्शना जरदोश, श्री अशोक अर्गल, श्री दुष्यंत सिंह, श्री अनुराग सिंह ठाकुर, श्री अर्जुन राम मेघवाल ने श्रीमती सुषमा स्वराज जी की बात के साथ सम्बद्ध किया है। श्री शैलेन्द्र कुमार ।

श्री मुलायम सिंह यादव (मैनपुरी): महोदया, मैं केवल दो मिनट लूंगा।

अध्यक्ष महोदया : श्री शैलेन्द्र जी के बदले श्री मुलायम सिंह यादव जी बोल रहे हैं।

...(*Interruptions*)

MADAM SPEAKER: All these interruptions will not go on record.

(Interruptions) â€¦ *

श्री शैलेन्द्र कुमार (कौशाम्बी): महोदया, मेरा अलग मैटर है।...(व्यवधान)